बी.ए पार्ट-3/हिन्दी (प्र०)/अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, राहिका, मधुबनी

दिनांक: 02.04.2021

पत्र- अष्टम/साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

काव्य-प्रयोजन

'काव्य-प्रयोजन' अर्थात् 'काव्य रचना का उद्देश्य' काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है, काव्य प्रयोजन के अंतर्गत इसका वर्णन किया गया है। भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में लोकहित को काव्य का मुख्य प्रयोजन माना है।

काव्य प्रेरणा और काव्य प्रयोजन में अंतर है। काव्य प्रेरणा का संबंध उसके प्रेरक तत्व के प्रभाव से है जबकि काव्य प्रयोजन का संबंध प्रेरक तत्व को व्यक्त करने से है। भिन्न-भिन्न समय में विभिन्न आचार्यों एवं साहित्यकारों ने अपने देश-काल और सामाजिक परिवेश (प्रेरक-तत्व) के प्रकृति के आधार पर काव्य प्रयोजन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है:—

01. आचार्य भरतमुनि :— आचार्य भरत मुनि ने 'लोकहित' को काव्य प्रयोजन माना है। वे काव्य या नाट्य को धर्म, यश, आयु का साधक, लोक-कल्याणकारी, बुद्धिवर्धक तथा लोकोपदेश माना है। वे कहते हैं——

"धर्म्यंशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥ (नाट्यशास्त्र)

लेकिन वे इसे नाट्य के परिप्रेक्ष्य में कहे थे। चूँकि नाटक काव्य का ही एक रूप है। अतः भरतमुनि द्वारा उक्त विचार को काव्य प्रयोजन स्वीकार किया जा सकता है।

02. भामह :— आचार्य भरतमुनि के बाद आचार्य भामह ने 'काव्यालंकार' नामक अपने ग्रंथ में 'पुरुषार्थ चतुष्टय' के अतिरिक्त कलाओं में विलक्षणता, प्रीति एवं कीर्ति को भी काव्य कला का प्रयोजन माना है। वे कहते हैं ——

"धर्मार्थ काममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्यनिबंधनम् ॥
(काव्यालंकार 1.2)

03. आचार्य वामन तथा भोज :- आचार्य वामन तथा भोज ने कीर्ति (यश) और प्रीति (आनंद) को काव्य प्रयोजन माना है।

"काव्यं सद्दृष्टार्थं प्रीतिकीर्तिहेतुत्वात्।"
(वामन, काव्यालंकार सूत्रवृत्ति 1-1-5)

अर्थात काव्य के प्रमुख दो प्रयोजन हैं:—

क) प्रीति (आनंद) की प्राप्ति, जो काव्य का दृष्ट प्रयोजन है।

ख) कीर्ति (यश) की प्राप्ति, जो काव्य का अदृष्ट प्रयोजन है।

04. आचार्य मम्मट :- आचार्य मम्मट ने "सद्यः पर निर्वृतिः" की व्याख्या में कहा है कि 'सकल प्रयोजन मौलिभूतं समानान्तरमेव रसास्वादसमुद्भूतं विगलित: वेद्यान्तरमानन्दम ।...? अर्थात इन सबसे अधिक काव्य से आनंद की प्राप्ति होती है। जो सभी प्रयोजनों का प्रयोजन है जो बिना किसी व्यवधान के रस-आस्वादन से उद्भूत होता है, जिसका चर्वणा (भोग) के समय सभी प्रकार का ज्ञान नष्ट हो जाता है।

इसप्रकार कला का उद्देश्य है — रस की सृष्टि (रस अर्थात आनंद)। आचार्य मम्मट ने व्यवहार ज्ञान को भी काव्य प्रयोजन माना है।

आचार्य मम्मट ने मूलत: छह काव्य प्रयोजन बताएँ हैं जो निम्नवत हैं — (1) यश प्राप्ति (2) अर्थ प्राप्ति (3) लोक व्यवहार (4) अनिष्ट का निवारण (4) या लोकमंगल (5) आत्मशांति तथा (6) कान्तासम्मित उपदेश। इसमें रचना करने वाले कवि के प्रयोजन यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्म शान्ति तथा पाठक के लिए लोकव्यवहार ज्ञान, लोकमंगल एवं कांतिसम्मित उपदेश काव्य प्रयोजन है।

 (क्रमशः.....)